International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 10; October 2016; Page No. 75-77

नासिरा शर्मा कृत 'जीरो रोड़' उपन्यास में व्यक्त खण्डित मूल्य–विश्लेषण

सुमन बाला

Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India

Introduction

'जीरो रोड' उपन्यास मानवता के प्रत्येक गुण का वर्णन करता है। दया, क्षमा, परोपकार, करूणा, प्रेम, सहिष्णुता आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति माना जाता है तथा एक अच्छे समाज का निर्माण करता है। ईर्ष्या, द्वेष, करूणा, बैर भाव से रहित मानव जिस समाज में रहता है वह अवश्य ही उन्नति करता है। उपन्यासकार ने इस पर विशेष बल दिया है। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने धर्म व कर्तव्य का पालन करता हुआ समाज में सदाचार को बढ़ावा देता हुआ जीवनयापन करे तो निश्चय ही लोकमंगल का विधान होता है। व्यक्तिगत धर्म, नारी धर्म, पति धर्म, मानव धर्म आदि को आदर्श माना गया है। इस उपन्यास के पात्र अपने–अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्होंने अपने उपन्यास में मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया गया है। ये अपने उपन्यास में किसी व्यक्ति को नहीं अपितु समाज, समूह, वर्ग, व्यवस्था, परम्परा, रूढ़ियों को खलनायक मानते हैं। इनके उपन्यास में जो मानव पात्र हैं उनका चरित्राकंन मनोविज्ञान की दृष्टि से भी किया गया है। इस उपन्यास में मनुष्य के मन में भरी नफरत के कारण पैदा हुए आतंक को चित्रित किया गया है। ये आंतक मनुष्य को किस हद तक गिरा देता है इसका अनुमान हम तो क्या वह खुद मनुष्य भी नहीं लगा सकता।

चाहे उसका कारण कुदरत हो, सियासत हो, या फिर व्यक्तिगत। मुझे बेहद सुकून मिलता है कुछ ऐसी चीजों को दोहराने में जो आपके अन्दर सूखते जख्म को फिर से कुरेदकर हरा कर आपकी इनसानियत जगा दें। आँसुओं से पाक कोई पानी नहीं है ! वह इनसानी अहसास का निचोड़ है, तभी वह नमकीन होता है !'' इतना कह शाहआलम ठहरे। कमरे में बैठे लोगों के चेहरों पर कई तरह के भाव उभरे।[1]

आज की फिल्में भी यथार्थ के धरातल पर तैयार की जाती हैं। पहले नायक और नायिका आदर्शवादी ही दिखते थे लेकिन आज की फिल्में समाज की बुराईयों, राजनीतिक हालातें को लेकर बनाई जाती हैं। विभिन्न देशों से आये युवक जब इकट्ठे होकर फिल्में देखते हैं तो अंतर राष्ट्रीय राजनीति तथा अनेक देशों के संकटों पर चर्चा आम होती है। आज के समय में बन रहीं फिल्मों के बारे में भी वे बाते करते हैं।

''हाँ हमारी फिल्में तो मध्यपूर्वी देशों और मध्य एशिया व कई अन्य देशों में बहुत चलता है। उनकी अपनी एक खूबी है मगर यह सच है कि सियासी घटनाओं पर सन्तुलन के साथ हमारा डायरेक्टर फिल्में नहीं बना पाता है। यहाँ तक कि इनसानी रिश्तों की पेचीदगियों पर भी फिल्में उठाते डरता है क्योंकि हर बात पर कोई–न–कोई समुदाय विरोध कर बैठता है। देखनेवालों की भी तो बात करेगा, उनकी मानसिकता कितनी ठस है।'' जलकर रामचन्द्रन बोल उठे।[2]

प्रत्येक व्यक्ति एक मानसिक पीड़ा से गुजरता है जिसमे नकारात्मकता ज्यादा हावी रहती है तथा वह अपने दुख को लगातार हवा ही देता रहता है। लेखिका ने कई स्थानों पर मानवीय संवेदनाओं को झकझोरते इस स्याह पक्ष को दर्शाया है जब मानवीय मन के साथ–साथ पशु–पक्षी भी विलाप करते दिखते हैं–

आँगन औरत–मर्द से भरने लगा। उनकी गुलाबी कामदार चूड़ियां तोड़ दी गई। नाक की कील बाकी जेवरों के साथ उतारी गयी और गुलाबी बेल लगे दुपट्टे की जगह उनके सिर पर सफेद दुपट्टा डाल दिया गया। पुरसा देने वालों के बीच सिसकियाँ उभर रही थीं। काली पूछने वालों को बता रहा था कि गाड़ी में मैसिव हार्ट अटैक हुआ। फौरन डॉक्टर मदद मिल जाती तो शायद बचाया जा सकता था, यही डॉक्टर ने हमें बताया।

तुतला अमरूद के पेड़ के नीचे जाकर खड़ा हो गया। उसे सब पर गुस्सा था। उसने गुस्से में आकर पिंजड़े का दरवाजा खोल दिया और झाड़ू के तिनके से कोंचकर उसे उड़ाना चाहा मगर तोता मटठर बना बैठा रहा आज उसे कोई भी रोज वाला नहीं लग रहा था।

जब जनाजा उठने को हुआ तो तुतला दौड़ कर मय्यत उठाने वाले की टाँग से लिपट उन्हें आगे बढ़ने से रोकने लगा। जब उसे झटका गया तो दरवाजे पर जाकर खड़ा हो गया और चींखने लगा।

बीबी, लोक लो हाफिज जी को, जाने न दो अब हम तो कौन प्याल कलेगा! बीबी, छुनती नहीं हो, ए बीबी!...इतना कह वह दोनों हाथों से मुँह छिपा बिलख उठी तुतला उनका आँचल पकड़े बुत बना हाफिज जी के गहवारे को चौखट से बाहर जाता देखता रहा।[3]

कैथरिन व सिद्धार्थ के उदाहरण द्वारा भी यह दर्शाया गया है कि समाज की उथल–पुथल प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती है। सिद्धार्थ

और कैथरिन जब मिलते हैं तो दुख की घड़ी में दोनों की संवेदनाएं एक जैसी हैं–

सिद्धार्थ को कैथरिन अच्छी लगी। उसकी बाते जिंदगी की सख्त चट्टानों से टकराती लगी। यह जानकर जहाँ उसे ताज्जुब हुआ वहीं राहत की अहसास भी जागा कि इनसान ऊपर से काली चमडी का हो या गोरी मगर अंदर से उसकी भावनाएं वही होती हैं जो इनसानी दुख–सुख से ताल्लुक रखती हैं।[4]

भारत एक रंगीला देश है जिसके बहुत सारे रीति रिवाज हैं। बच्चे के जन्म से लेकर मरने तक सारे कार्य रीति रिवाजों से किये जाते हैं तथा ये सारे देशों में भिन्न–भिन्न होते हैं। इस उपन्यास में सिद्धार्थ की माँ द्वारा रंगोली बनाई जाती है। किसी के तिलक, मेंहदी की रस्म, शादी की रस्म, विवाह में होने वाली बहुत सारी रस्में, नई दुल्हन द्वारा चावल को लोटा गिराना होती हैं सभी लोग अपने आस–पड़ोस, सगे संबंधियों को इसमें आदर पूर्वक बुलाते हैं उनके साथ अपनी खुशियां बांटते हैं–

''मैं भी पूछना चाह रहा था कि अब कब फोन करेगा वह ताकि उस समय हम घर पर ही बने रहें। वैसे भी जाना कहाँ होता है। कल चांस की बात थी कि दुर्गादास के बेटे के तिलक में जाना पड़ा।'' रामप्रसाद बुझे स्वर में बोले।

''यह चुन्नू बड़ा दुष्ट हो गया है।'' राधारानी रंगोली की थाली उठाते हुए बोलीं। ''जाकर पूछ आतीं तो मन की चिन्ता दूर होती।'' रामप्रसाद कुछ कुढ़े स्वर में बोले।

''तुम खुद सीधे पी.सी.ओ. जाकर बेटे को फोन क्यों नहीं कर लेते कि आख़िर इतनी रात गये उसका फोन क्यों आया था ?'' [5]

जब हाफिज की दिल के दौरे से मृत्यु हो जाती है तो उसकी पत्नी की गुलाबी कामदार चूड़ियाँ तोड़ दी जाती हैं और उसे विधवा का पहनावा पहना दिया जाता है।

आँगन औरत–मर्द से भरने लगा। उनकी गुलाबी कामदार चूड़ियां तोड़ दी गई। नाक की कील बाकी जेवरों के साथ उतारी गयी और गुलाबी बेल लगे दुपट्टे की जगह उनके सिर पर सफेद दुपट्टा डाल दिया गया। पुरसा देने वालों के बीच सिसकियाँ उभर रही थीं। काली पूछने वालों को बता रहा था कि गाड़ी में मैसिव हार्ट अटैक हुआ। फौरन डॉक्टर मदद मिल जाती तो शायद बचाया जा सकता था, यही डॉक्टर ने हमें बताया। [6]

विवेक और जगतबाबू जब शव लेकर गली में पहुँचे तो सारा मोहल्ला तंग गली में समा गया। मौत कैसे दबे पाँव आती है, इसका अहसास राधारानी को पति का बेजान शरीर देख कर जागा। उनकी आँखे सूखी थीं। उन्हें जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। यशोधरा को उन्हें रूलाने का एक ही उपाय सूझा, सो हाथों की चूड़ियाँ उन्होनें तोड़ी और उसी के साथ राधारानी का विलाप घर के आँगन से उठकर गली में जा पूरे मोहल्ले में फैल गया।[7]

व्यक्ति के मरने के बाद भी उसे घर से विदा करते समय बहुत से रिवाज होते हैं बहुत सारी रस्मों के साथ उसे घर से विदा किया जाता है। जब चुन्नी राम सिद्धार्थ को दुबई में मंदिर बनाने के बारे में उकसाते हैं तो वह वहाँ के सख्त रीति–रिवाजों व कानूनों का हवाला देकर कहता है कि अगर उसनें दुबई में जाकर मंदिर–मस्जिद के मुद्दे उठाये तो उसका वहाँ रहना मुश्किल हो जायेगा।

यह उल्लेखनीय है कि संपूर्ण उपन्यास मे नैतिक मूल्यों एवं मर्यादाओं का पालन किया गया है। नर–नारी संबंधों में मर्यादा, नैतिकता एवं पावनता का ध्यान रखा गया है। कष्ट एवं पीड़ा सहकर ही प्रेम की तीव्रता को बढ़ाया जा सकता है। उपन्यास में समकालीन मूल्यों का पूरा ध्यान रखते हुए तदनुरूप चरित्र चित्रित किये गये हैं।

इस उपन्यास की कथावस्तु में निश्चित रूप से नयापन है। घटना बहुलता है तथा उन घटनाओं के कार्य कारण संबंध से परस्पर जोड़ा गया है। उपन्यास अपने समय एवं परिवेश को बखूबी प्रस्तुत करता है।

नासिरा जी के पात्रों में सामान्य जन सदैव सदाचारी, परोपकारी व दूसरों की भलाई करने वाला ही होता है। नैतिकता को तार–तार करने में कुछ मौकापरस्त लोग जिनमें ज्यादातर राजनेता व पंडे–पुजारी होते हैं, जिनका काम समाज का सदैव शोषण ही रहा है–

''गुजरात तो 1984 के हुए दंगों से भी आगे निकल गया। उसमें प्रधानमंत्री की हत्या के बाद मारकाट का माहौल बना था और गुजरात के हंगामों में गोधरा कांड के बाद जो खूनखराबा शुरू हुआ तो अब तक रूकने का नाम नहीं ले रहा है। नफ़रत लोगों की खाल में दाखिल हो गई है। मैं अगर यहाँ रह जाता तो वास्तव में इस तरह के दबाव के चलते मुझसे कोई पाप हो जाता ! मन तो मेरा आज भी पूरी तरह से साफ नहीं हो पाया है। बार–बार कुछ ऐसी घटनाएँ इस कौम के प्रति आक्रोश भर देती हैं। आखिर ऐसा क्या ? क्या इसमें बचपन का वह संस्कार शामिल है जो इनसे दूर रहना बताता है ? इन्हें म्लेच्छ, आक्रमणकारी, बलात्कारी, आतंकवादी, क्रूर नैतिक मूल्यों को विरोधी बताता है। क्या यह पूरा सच है ? सिद्धार्थ का दिमाग फटने लगा। उसने अपने से एक सीधा सवाल कर डाला कि यदि वह चेहरा उसे प्यारा न लगता तो क्या वह अपने आप को गुनाहगार समझता ? शायद नहीं। तब उसके लिए हामिद की मौत का हादसा दूसरे हादसों की तरह लगता। पढ़ता और भूल जाता। देखता और असर न लेता। सारा खेल शायद उस राग का होता है जिसमें इनसान बँध जाता है। इसका मतलब है कि हम भारतीय नागरिकों के बीच कोई राग नहीं बल्कि सब अपने घेरे तक सीमित हैं और उसी सीमा में रह अपने धर्म, जात, नस्ल, समुदाय और रंग से प्रेम करते हैं।''[8]

डॉ. शाहआलम जो गुजरात से हैं बताते हैं कि कम्पनियाँ मजदूरों को दुबई ले तो आती हैं, लेकिन उनकी ठीक से देखभाल नहीं की जाती। सिद्धार्थ जैसे कितने ही भटकते युवा नैतिकता के उडते मजाक को प्रस्तुत करते हैं–

''मेरे सामने अब दो रास्ते हैं। या तो यह नौकरी छोड़ दूं और वापिस वतन लौट जाऊं। बहुत हो चुका। या फिर इसी तरह घुट–घुट कर खुद मर जाऊं। बात सिर्फ इन दो नेपाली चौकीदारों की नहीं बल्कि हर उस कर्मचारी की है जो बीमार होता है, जिसके इलाज की पूरी जिम्मेवारी कम्पनी की है मगर वह इस फर्ज को निभाना नहीं चाहती है!'' इतना कहकर शाहआलम चुप हो गए। सिद्धार्थ का शक सच निकला। आखिर शाहआलम को मथने वाली परेशानी कोई छोटी–मोटी नहीं है खासकर एक डॉक्टर के लिए, जिसने काम शुरू करने से पहले शपथ ली हो, जिसका स्थान भगवान के बाद दूसरा हो।''[9]

नैतिक मूल्य भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण आयाम है, जिसको पश्चिमी सभ्यता या आधुनिकी करण गर्त में ले जा रहा है। सिद्धार्थ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति तथा दुबई में पनप रही पश्चिमी सभ्यता की तुलना करते हुए सोचता है–

'जहाँ आपसे में मिलने की ही नहीं बातचीत और घूमने–फिरने की आजादी है। जहाँ औपाचारिकतावश हाथ मिलाना व गालों का चुंबन लेना उसी तरह मान्य है जैसे हाथ जोड़ नमस्ते करना या सिर व कंधे पर हाथ रखना। यदि बाबू जी कैथरिन को मेरे गालों पर किस करता देख लेते तो बेहोश हो जाते। मुझे बुरा–भला कहने में कोई कौर कसर न छोड़ते। पड़ौस की लड़की की मीठी नजरों का जवाब न देना जहाँ मुझे गैर इनसानी लगता है वहीं पर अनैतिक भी। मगर इन सारे बलिदानों से गुजर कर बाबूजी के उपदेश सुनने पड़ते हैं। जैसे मेरा न अपना कोई चरित्र है और न विचार।''[10]

इस उपन्यास के कथानक की विशेषता यह है कि उसमें कहीं पर बिखराव नहीं है। शुद्ध मनोरंजन, देश की दयनीय स्थिती, ग्रामीण परिवेश, मेहनत के कारण छोड़ा हुआ देश, दूसरे देश में बसता आदमी और उसकी कठिनाईयों को इन सबको ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया है।

लेखिका का मत है कि भारत एक धर्म परायण देश है। इसमें भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। भक्ति में कोई मूर्ति पूजा, मंदिर, मस्जिद आदि को मानते हैं लेकिन कोई श्रृंगार भक्ति को मानते हैं। उसमें भक्ति संबंधी सैंकड़ों सूक्तियां यत्र–तत्र उपलब्ध हो जाती है। इसमें कई कवियों ने राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं का गान करते हुए रचनाएं प्रस्तुत की हैं। उनमें श्रृंगारिकता के साथ–साथ भक्ति भावना विद्यमान है। हमारे समाज में ऐसा कोई भी मनुश्य नहीं है जो भगवान की भक्ति में विश्वास न रखता हो।

हिंदू और मुस्लिम भगवान की भक्ति में कहाँ रमेंगें अगर उनका ध्यान सिर्फ दूसरे धर्म से बदला लेना होगा। भगवान की भक्ति के लिए एक दूसरे के धर्म का सम्मान भी होना चाहिए। सिद्धार्थ दुबई के सख्त कानूनों तथा धार्मिक भावनाओं का पक्षधर ही प्रतीत होता है।

उसे याद आया कि किसी ने दीया जला क्रीक के पानी में बहाया था। उस पर जुर्माना हुआ और बताया गया कि उस तरह की व्यक्तिगत आस्थाओं और रीति–रिवाजों को आप पब्लिक जगहों पर व्यक्त नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यहाँ अन्य विश्वास वाले भी रहते हैं। उनकी भावनाओं का भी हमें सम्मान करना चाहिए। शायद उसमें समुंद्री जीव–जंतुओं की भी ख्याल हो, जिससे पर्यावरण दूषित न हो। ऐसे माहौल में एक मंदिर का आंदोलन छेड़ना ? कैसी नामुमकिन–सी बात है ! जहाँ पर यह बात साफ है कि किसी की सियासी महत्वाकांक्षाओं को पूरी कराने की नहीं है बल्कि यहाँ पूरी कोशिश इस बात की है कि इनसान अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ किस तरह दूसरों के संग राहत व आराम से जिंदगी बसर कर सकता है।''[10]

नासिरा शर्मा ने माना है कि भारत को संतो की धरती कहा जाता है। इस देश में न जाने कितने ही संत पैदा हुए और चले गये। परंतु अब हमारे देश में भगवान की भक्ति के नाम पर अंधविश्वास, स्वार्थपरता ने जगह ले ली है। कोई भी सच्चे मन से या तपस्या से भगवान की भक्ति नहीं करता वे तो अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे हुए है। इस उपन्यास में भी हिंदु–मुसलमान लोग आपस में लडाई–झगड़े करके मर रहे हैं तथा पंडे–पुरोहित तथा मौलवी उन्हें समझाने की बजाय ज्यादा भड़काते हैं।

निष्कर्षः

कहा जा सकता है कि 'जीरो रोड़' उपन्यास में मानवता के युगों का वर्णन किया गया है। दया, क्षमा, परोपकार, करूणा, प्रेम, सहिष्णुता आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, करूणा, वैर भाव से रहित मानव जिस समाज में रहता है वह अवश्य ही उन्नति करता है।

संदर्भ सूची

1. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...85।
2. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...89।
3. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...93।
4. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...329।
5. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...306।
6. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...16।
7. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...340।
8. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...282–283।
9. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...309।
10. नासिरा शर्मा 'जीरो रोड़' पृ0...283।